जैन युग

* ई० पूर्व ५ से लेकर ईसवी ६ तक प्राप्त होता थी
* जैनियों के ठाणांग, सूत, रायापसेणीय तथा कल्पसूत्र में संगीत संबंधी सामग्री पाई जाती थी
* जैन परम्परा के अनुसार संगीत तथा गान्धर्व इनका प्रवर्तन महात्मा महावीर के द्वारा हुआ थी

- राजा उदायन संगीत कुशल राजा थे।
- गन्धर्व, नट, नर्तक, लासक, तुणेल, तुम्बवीणिय एवं भागदक्षिण के (कार्यक्रम संगीत)
- डोम्ब जाति के लोग संगीतप्रियता के लिए प्रसिद्ध थे।
- किणिक जाति के लोग वाद्यों के लिए चर्म की थैलियाँ बनाते थे।
- आदिम नृत्य नाट्य महावीर की जीवनी पर आधारित था।
- वैदिक काल में स्वर या यम की संख्या - 7 थी।
- सात स्वरों की संज्ञा इस प्रकार थी -
  - क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मन्द्र और अतिस्वार्य जो बाद में - षड्ज, रिषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद हुये।
- स्वरित के दो भेद थे।
- पदों की ऋचायें कही जाती थी।
- जैन ग्रन्थ - रायपसेणीय, जीवाभिगम, जीवद्वीपप्रज्ञप्ति, अनुयोग सूत्र, आदि,
- शंख का उपयोग धार्मिक और साधु करते थे।
- जैन परम्परा के प्रसिद्ध आचार्य - भरत तथा विशाखिल
- ठाणांग के अभयदेव के अनुसार चौदह पूर्व ग्रंथों में से एक ग्रंथ पूर्वगत स्वरप्राभृत था।
- ठाणांग सूत्र में स्वरों की उत्पत्ति, स्वर का प्राणियों से संबंध, ग्राम तथा मूर्च्छनाऐं, गीत के गुण दोष इत्यादि विषयों का विवरण है।

जैन युग में संगीत ब्राह्मणों को अधिकार से बाहर निकलकर जन सामान्य, शूद्र एवं पिछड़ी जातियों में भी प्रचलित हुआ और वे संगीत का आलम्बन स्थान लेने लगी।

वीणा का विशेष उल्लेख मिलता है।

अनेक नई गायन शैली विकसित हुई

संगीत प्रतियोगिता भी होता था।

वाद्यों में मृदंग, वीणा तथा दुंदुभि का प्रयोग होता था।